ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति जागरुकता, ज्ञान साझाकरण अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक आकांक्षाओं का अध्ययन

शिक्षाशास्त्र विषय में पी-एच. डी. उपाधि की आंशिक पूर्ति हेतु
प्रस्तावित रूपरेखा

डॉ० नीतू सिंह
शोध निर्देशिका

प्रियंका शर्मा
शोधार्थिनी

पेडागॉजिकल साइन्सेज विभाग, शिक्षा संकाय
दयालबाग एजुकेशनल इंस्टीट्यूट (डीम्ड टू बी यूनिवर्सिटी)
दयालबाग, आगरा, 282 005

2024

1.0 प्रस्तावना

किसी भी देश और समाज के विकास का मूल आधार देश के छात्र होते हैं अतः छात्रों का सर्वांगीण विकास करना प्रत्येक देश का महत्वपूर्ण कार्य होता है। स्वतंत्रता प्राप्ति के समय से ही शिक्षा के स्वरूप को इस प्रकार से बदलने का प्रयास किया जा रहा है जिससे वह समाज और राष्ट्र दोनों का हित कर सके। राष्ट्रीय शिक्षा आयोग 1964-66 शिक्षा राष्ट्र के आर्थिक.सामाजिक विकास का शक्तिशाली साधन है शिक्षा राष्ट्रीय सम्पन्नता एवं कल्याण की कुंजी है।

स्वतंत्रता प्राप्ति के कई दशक बाद भी भारत में कई प्रकार की असमानताऐं पायी जाती हैं। यह देश के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों की दो अलगअलग वास्तविकताओं को दर्शाती है। ग्रामीण क्षेत्र में जहाँ एक ओर किसान ग्रामीण - अर्थव्यवस्था की रीढ़ है, वहीं शहरी क्षेत्रों की अर्थव्यवस्था का आधार विभिन्न प्रकार के उद्योग, विकास कार्य एवं तकनीकी विकास हैं। ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रां में रहने वाले लोग केवल अपने कार्यो के आधार पर एक ही एक दूसरे से भिन्न नहीं है अपितु इनकी जीवन शैलियाँ भी पूर्णरूपेण भिन्न हैं। जनगणना 2011 के अनुसार भारत में 68.4 प्रतिशत ग्रामीण जनसंख्या एवं 31.16 प्रतिशत शहरी जनसंख्या निवास करती है। शहरी क्षेत्र सभी प्रकार की सुविधाओं से युक्त हैं जबकि ग्रामीण क्षेत्रों में पर्याप्त शिक्षण संस्थान, चिकित्सा सुविधाऐं बिजली परिवहन के साधन आदि या तो ना के बराबर हैं अथवा पर्याप्त मात्रा में एवं विकसित रूप में उपलबध नहीं है। इसके विपरीत शहरी जनसंख्या शिक्षा के क्षेत्र में उपलब्ध सभी अवसरों का प्रयोग करती हैं एवं विकास कार्यों में व्यस्त रहती है। इसी कारण आर्थिक समस्याओं एवं विद्यालयों के अभाव में ग्रामीण क्षेत्रों में निवास करने वाले व्यक्ति शहरी क्षेत्रों में पलायन करते हैं। राष्ट्रीय सांख्यिकीय कार्यालय (2020) की रिर्पोट के अनुसार भारत के ग्रामीण इलाकों की साक्षरता दर 73.5 फीसदी जबकि शहरी इलाके की साक्षरता दर 87.7 फीसदी है।

वर्तमान समय तकनीकी विकास से परिपूर्ण है। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में तकनीकी ने अपनी पहुँच बनाकर मानवीय श्रम को काफी कम करने में सहायत क्षेत्र भी इससे अछूता नहीं हैं। शिक्षा के क्षेत्र में तकनीकी ने शिक्षण एवं अधिगम प्रक्रिया को प्रभावशाली बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया हैं।

यूनेस्को के अनुसार सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी एक वैज्ञानिक तकनीकी और इंजीनियरिंग अनुशासन और प्रबंधन

तकनीकी है जिसका उपयोग सूचना और अनुप्रयोग को संभालने और सामाजिक, आर्थिक और सांस्कृतिक मामलों के साथ जुड़ने में किया जाता है। वर्तमान समय में सूचना एवं संचार तकनीकी निरंतर विकसित हो रही है एवं जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में अपनी अहम भूमिका बना रही है। शैक्षिक अवसरों को विस्तृत करने, उच्च शिक्षा के क्षेत्र में उल्लेखनीय विकास करने, शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने के लिए सूचना एवं संचार तकनीकी एक प्रभावशाली साधन है भारतीय परिप्रेक्ष्य में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति जागरूकता में कुछ ही वर्षों में सर्वाधिक वृद्धि हुई हैं प्रत्येक आयुवर्ग के व्यक्ति तकनीकी उपकरणों का प्रयोग करना सीख रहे हैं एवं इनके प्रति आकर्षित हो रहे हैं।

कार्टर (1987) के अनुसार," सचूना एवं संचार तकनीकी से तात्पर्य उस सूचना संचार तकनीकी से है जिसके माध्यम से सम्प्रेषण संचार कार्य अत्यधिक ढंग से किया जाता है इस तेजी से परिवर्तित होते हुए तकनीकी युग में शिक्षा एवं सूचनाओं का विस्तार भी निरंतर हो रहा है सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी ने शिक्षा को प्राप्त करने के अवसरों को विस्तृत करने, शिक्षा प्रदान करने के रूपों को विकसित करने एवं शिक्षा की गुणवत्ता बढ़ाने में अति महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है।

अधिगम की प्रक्रिया में अंतक्रियात्मक वातावरण होना अधिगम को प्रभावी बनाता है। शिक्षण-अधिगम की प्रक्रिया में छात्रों को सक्रिय बनाये रखने हेतु आवश्यक होता है कि शिक्षक छात्रों के साथ निरंतर अंतक्रिया करें। साथ ही छात्र को भी एक-दूसरे के साथ सूचनाओं को साझा करने के अवसर देने चाहिए। ज्ञान साझा करना एक व्यक्ति से दूसरे व्यक्ति को औपचारिक तथा अनौपचारिक सूचनाओं तथा जानकारी स्थानांतरित करने की प्रक्रिया है। ज्ञान-साझा करने के लिए विभिन्न माध्यम जैसे- सोशल मीडिया तथा इंटरनेट आदि का उपयोग किया जाता है।

बासम हसन (2019) के अनुसार- ज्ञान साझा करना संगठनों के लिए रामबाण है। ज्ञान साझा करना नवाचार उत्पादकता की प्रक्रिया तेज कर सकता है और उत्पादों और सेवाओं में मूल्य जोड़ने की क्षमता रखता है जिसके परिणाम स्वरूप अंततः संगठनों का राजनीतिक विकास हुआ और डिजिटल दुनिया में बेवसाइट और एप्लीकेशन व्यक्तियों के बीच ज्ञान साझा करने में सक्षम है।

खान और अली (2019) के शब्दों में ज्ञान साझाकरण अभिवृत्ति का पोषण और विकास किया जा सकता है यदि कर्मचारियों के द्वारा एक संगठन के प्रति अनुकूल, दृष्टिकोण और इरादों को विकसित किया जाये तो कर्मचारियों में

आपस में ज्ञान साझाकरण सम्भव है।

व्यावसायिक आकांक्षा परस्पर दो शब्दों व्यवसाय और आकांक्षा से मिलकर बना है इनमें से प्रथम शब्द व्यवसाय का तात्पर्य जीविकोपार्जन अर्थात् जीविका कमाने के महत्व की वस्तुओं एवं क्रियाओं से है। दूसरे शब्दों में आकांक्षा का शाब्दिक अर्थ अभिलाषा या इच्छा से है जिसके परिणाम स्वरूप व्यक्ति अपने लक्ष्य को निर्धारित कर उसकी प्राप्ति हेतु प्रयत्नशील रहता है। इस प्रकार जब किसी व्यक्ति की इच्छा या अभिलाषा से किसी जीविकोपार्जन के महत्व की वस्तुओं एवं क्रियाओं की प्राप्ति होती है और उसे प्राप्त करने के लिए प्रयत्नशील रहता हैं तो उसकी यही इच्छा या अभिलाषा व्यावसायिक आकांक्षा है। डॉलर एवं मिलर(1983) के अनुसार-व्यावसायिक उद्धेश्य के प्रति किसी व्यक्ति की इच्छा को जानना ही व्यावसायिक आकांक्षा कहलाती हैं। अपनी रुचियों एवं क्षमताओं के आधार पर प्रत्येक व्यक्ति भिन्न भिन्न व्यवसायों को प्राप्त करने की कामना करता है एवं उन्हें प्राप्त करने के लिए प्रयासरत् रहता है। अपनी रुचि के अनुसार व्यवसाय प्राप्त करने की यही कामना व्यावसायिक आकांक्षा कहलाती है।

2.0 समस्या का प्रादुर्भाव

भारतीय परिवेश में जनसंख्या ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में निवास करती है। ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों के विद्यार्थियों में व्यक्तिगत भिन्नता पायी जाती है तथा दोनों क्षेत्रों के विद्यार्थियों की सोचने समझने की शक्ति तथा जीवन यापन करने के तरीके में भिन्नता पायी जाती है। है। सन् 1990 का दशक कम्प्यूटर-इंटरनेट आदि के माध्यम से संचार क्रान्ति का युग था। संचार क्रान्ति ने ग्रामीण एवं शहरी दोनों क्षेत्रों को प्रभावित किया। नगरीय क्षेत्रों में आधारभूत संरचना के विकास, बिजली उपलब्धता आदि के कारण संचार साधनों ने शहरी क्षेत्रों को अधिक प्रोत्साहित किया है। ग्रामीण क्षेत्रों में साक्षरता की कमी, जागरूकता का अभाव, निम्न सामाजिक आर्थिक स्तर आदि समस्याओं के कारण ग्रामीण क्षेत्र पिछड़ गये। वर्मा सी. एवं दाहिया एस. (2016) द्वारा बताया सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी जागरूकता के प्रति महिला संकाय व पुरूष संकाय के बीच समान जागरूकता थी। जवीरिया जे सायरा एस. के महमूद (2020) अध्ययन में पाया गया कि ज्ञान साझाकरण के प्रति इच्छा को प्रभावित करने वाले कारकों को व्यापक रूप से संगठनात्मक और व्यापक कारकों के रूप में नकारात्मक पाया गया। गया। ए. अलगु (2018) अनुसार ग्रामीण छात्रों में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति कम जागरूकता तथा आईसीटी का कम उपयोग पाया गया। ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में समान परिवेष में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति जागरूकता ज्ञान साझाकरण अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक

आकांक्षाओं में समानता पायी जाती है अथवा भिन्नता। यह जानने हेतु शोधार्थिनी द्वारा इस शोध समस्या का चयन किया गया है। शोधार्थिनी द्वारा निम्नलिखित शोध प्रश्नों का उत्तर जानने हेतु वर्तमान शोध समस्या पर कार्य करना आवश्यक है।

1. क्या ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के मध्य सूचना एवं संचार प्रोद्योगिकी के प्रति जागरूकता समान पायी जाती है?

2. क्या ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के मध्य ज्ञान साझाकरण अभिवृत्ति में अन्तर होता हैं?

3. क्या ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में समान व्यावसायिक आकांक्षा पायी जाती है?

शोधार्थिनी द्वारा उपर्युक्त शोध प्रश्न का हल जानने हेतु वर्तमान शोध कार्य को पूर्ण किया जायेगा।

3.0 समस्या का औचित्य

शिक्षा राष्ट्र की प्रगति संस्कृति भावना एवं संस्कार का प्रतीक है। वर्तमान काल में किसी विद्यालय, समाज तथा राष्ट्र को उन्नति के शिखर तक ले जाने के लिए वहाँ की शिक्षा का विकास आवश्यक है ताकि शिक्षा प्राप्त कर रहे विद्यार्थियों की उपलब्धि व सफलता में वृद्धि की जा सके। भारत एक विकासशील देश है जिसकी जनसंख्या ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में निवास करती है।

वर्तमान समय में बढ़ती हुई समस्याओं के कारण विद्यार्थियों की सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति जागरूकता ज्ञान साझाकरण अभिवृत्ति, व्यावसायिक आकांक्षा पर बल देने की अधिक आवश्यकता है। विद्यार्थियों की सूचना एवं संचार प्रोद्यौगिकी के प्रति जागरूकता अधिक आवश्यक है क्योंकि विद्यार्थियों जागरूक होंगे तभी देश का विकास सम्भव है तथा प्रगति की ओर अग्रसर होंगे। प्रत्येक छात्र जीवन के कुछ विभिन्न स्तरों पर कुछ न कुछ महत्वपूर्ण निर्णय लेता है। जिनमें कुछ निर्णयों का प्रभाव व्यक्ति के जीवन पर्यन्त रहता है। विद्यार्थियों का स्वयं के लिए उपयुक्त व्यवसाय का चयन भी इसी प्रकार का एक महत्वपूर्ण निर्णय है जो छात्रों के भविष्य को एक निश्चित आकार प्रदान करता है। जब कोई व्यक्ति या छात्र अपना ज्ञान किसी अन्य को बाँटेगा तो उसका स्वयं का ज्ञान और अधिक बढ़ेगा। वर्तमान अध्ययन में उपर्युक्त शब्दों में व्यक्त किया गया कि भारत की जनसंख्या ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्रों में निवास

करती है शोधार्थिनी का उद्देश्य ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति जागरूकता, ज्ञान साझाकरण अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक आकांक्षा का अध्ययन करना है। इस शोध के माध्यम से ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों की सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति जागरूकता, ज्ञान साझाकरण अभिवृत्ति को बढ़ावा देना तथा व्यावसायिक आकांक्षाओं को विकसित करने पर बल दिया जाना है। विद्यार्थियों की सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति जागरूकता से सम्बन्धित विभिन्न पक्षों में बहुत से अध्ययन हुये हैं परन्तु विद्यार्थियों की सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति जागरूकता, ज्ञान साझाकरण अभिवृत्ति, व्यावसायिक आकांक्षा को लेकर शोध की कमी महसूस हुई, इसलिए शोधार्थिनी द्वारा इस शोध अध्ययन को किया जायेगा। शोधार्थिनी ने वर्तमान समस्या का चयन करने से पूर्व विभिन्न शोध अध्ययनों का सर्वेक्षण किया है जिनका विवरण तालिका सं.1 में दर्शाया गया है।

तालिका संख्या 1.0 सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति जागरूकता, ज्ञान साझाकरण अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक आकांक्षा से सम्बन्धित अध्ययन

क्रम सं.	वर्ष	शोधार्थी	अनुसंधान क्षेत्र	परिणाम
1.	2021	प्रकाश जे.एम., कुमार पी.	सूचना एवं संचार प्रोद्यौगिकी के संबंध में माध्यमिक शिक्षक, शिक्षा छात्रों की जागरूकता पर एक अध्ययन	परिणामों में पाया गया कि पुरुष छात्र इंटरनेट जागरुकता में महिला छात्रों से बेहतर है। पुरुष छात्रों में सूचना एवं संचार प्रोद्योगिकी के प्रति अधिक जागरूकता पाई गयी।
2.	2020	जंवीरया जावेद, सायरा सोरोया, खालिद महमूद	पाकिस्तान में विश्वविद्यालय के शिक्षकों के ज्ञान भाजन अभिवृत्ति े पर व्यक्तिगत और संगठनात्मक कारकों का प्रभाव।	संकाय सदस्यों की ज्ञान साझा करने की इच्छा को प्रभावित करने वाले कारकों को व्यापक रूप से संगठनात्मक और व्यक्तिगत कारकों के रूप में नकारात्मक पाया गया।
3.	2018	सैयद अलीरजा, मासूमा आबिदी, गुलाम मुहम्मद अरसलान, आसिफ कुरैशी	विश्वविद्यालय के छात्रों के बीच ज्ञान साझा करने का दृष्टिकोण, छात्रदृष्टिकोण, विश्वास व्यक्तिपरक मान दंड, प्रेरणा और पुरूस्कार का प्रभाव	अध्ययन के परिणाम बताते हैं कि विश्वविद्यालय के छात्रों के बीच ज्ञान विनिमय व्यवहार पर छात्र रवैया, विश्वास, व्यक्तिपरक मानदंड, प्रेरणा और पुरुस्कार का महत्वपूर्ण सकारात्मक प्रभाव पड़ता है।
4.	2018	अलगु ए.	अवेयरनैस एण्ड यूज, ऑफ सूचना एवं संचार प्रोद्यौगिकी के प्रति अमांग अण्डरग्रेजुएट स्टूडेन्ट ऑफ सरल ऐरिया इन डिंडिगुई डिस्ट्रिक	ग्रामीण छात्रों में सूचना एवं संचार प्रौद्यौगिकी के प्रति कम जागरूकता तथा कम उपयोग पाया गया।
5.	2016	वर्मा सी., दहिया, एस.	भारतीय विश्व विद्यालयों में सूचना एवं संचार प्रोद्यौगिकी जागरूकता के प्रति लैंगिक	लैंगिक परिवर्तन ने सूचना एवं संचार प्रोद्यौगिकी जागरूकता के प्रति महिला संकाय व पुरुष संकाय के बीच कोई

			अन्तर	सार्थक अन्तर नहीं है।
6.	2016	मुहम्मद सब्बीर रहमान, अहृद एम उस्मानी	उच्चशिक्षण संस्थानों के गैर-शैक्षणिक कर्मचारियों के बीच ज्ञान साझा करने का व्यवहार दृष्टिकोण व्यक्तिपरक : मानदंड और व्यवहार संबंधी इरादा एम्बेडेडमॉडल	इस शोध के परिणाम बताते हैं कि रवैया और व्यक्तिपरक मानदंड दोनों कर्मचारियों के ज्ञान साझा करने के व्यवहार को महत्वपूर्ण और सकारात्मक रूप से प्रभावित करते हैं।
7.	2014	रोलैंड के ये ओ, जेफ गोल्ड	अऊदी अरब के संगठनों में ज्ञान साझा करने का रवैया और व्यवहारः विश्वास क्यों मायने रखता है।	सऊदी अरब के संगठनों में ज्ञान साझा करने के प्रति कर्मचारियों के रवैये में सकारात्मक योगदान पाया गया।
8.	2012	करेंद्र देवरूप	जैज अध्ययन में पढ़ाई करने वाले कॉलेज के छात्रों की व्यवसायिक, आकांक्षाऐं और अपेक्षाऐं	प्रतिभागियों में चरों के बीच संबंधों के विश्लेषण से व्यावसायिक आकांक्षा और महत्वपूर्ण अन्य लोगों के समर्थन के बीच कम सकारात्मक संबंध का पता चला।
9.	2011	टीचर दी रोवन, केनियन, लौरा डब्ल्यू पर्ना, एमी के स्वान	संरचना अवसर हाई स्कूल : के छात्रों की व्यवसायिक आकांक्षाओं को आकार देने में स्कूल के सन्दर्भ की भूमिका	इस अध्ययन में स्कूलों के संसाधन स्तर से जुड़ी हुई थी। अध्ययन से पता चलता है कि हाई स्कूल के छात्र अपने करियर में व्यावसायिक आकांक्षाओं को लेकर नकारात्मक पक्ष में थे।
10.	2011	प्रो.एम.के.एस .	भारत के उत्तर पूर्वी क्षेत्र के विश्वविद्यालय और कॉलेजों, शिक्षकों के बीच सूचना एवं संचार प्रोद्यौगिकी के प्रति जागरूकता एक सर्वेक्षण :	इस अध्ययन के परिणामों में पाया गया कि सूचना एवं संचार प्रोद्यौगिकी की पहुँच बहुत धीमी है और शिक्षक कम्प्यूटर का उपयोग करने में बहुत सहज नहीं हैं।
11.	2010	मार्क वाटसन, मैरी मैकमोहन, चेरिल क्राफ्ट कैचरीन एल्सो	सम सामाजिक आर्थिक काले दक्षिण अफ्रीकी बच्चों की व्यावसायिक आकांक्षाऐं	व्यवसायों के प्रति सकारात्मक इच्छा पायी गयी। जिनमें से 80 प्रतिशत से अधिक उच्च स्थिति वाले व्यवसायों के लिए सकारात्मक इच्छा रखते थे।

उपरोक्त शोध अध्ययनों का सर्वेक्षण करने के पश्चात् शोधार्थियों ने पाया कि सूचना एवं संचार प्रौद्यौगिकी, ज्ञान साझाकरण अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक आकांक्षाओं को ग्रामीण एवं शहरी जनसंख्या के सन्दर्भ में अध्ययन नहीं पाया गया है। समय के साथसाथ निरन्तर विकास एवं तकनीकी क्रान्ति के कारण वर्तमान परिप्रेक्ष्य में उपरोक्त समस्या का - अध्ययन किया जाना आवष्यक है। जिससे ज्ञात हो सके कि ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी, ज्ञान साझाकरण अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक आकांक्षाओं में समानता पायी जाती है अथवा भिन्नता पायी जाती है। यदि किसी भी प्रकार की भिन्नता या निम्नता पायी जाती है तो भविष्य में विद्यार्थियों को सूचना एवं संचार प्रौद्यौगिकी, ज्ञान साझाकरण अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक आकांक्षाओं के सन्दर्भ में जागरूक किया जा सके।

4.0 समस्या कथन

ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के मध्य सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति जागरुकता, ज्ञान साझाकरण अभिवृत्ति, व्यावसायिक आकांक्षाओं का तुलनात्मक अध्ययन।

5.0 समस्या कथन में प्रयुक्त पदों की परिभाषा

5.1 सूचना एवं संचार प्रोद्यौगिकी

5.1.1 सैद्धान्तिक परिभाषा अन्याकोहा - 1991 के अनुसार, सूचना प्रौद्योगिकी "सूचना के संग्रह, उत्पादन, संचार, रिकॉर्डिंग, पुनः प्रबंधन और शोषण के लिए मानव निर्मित उपकरणों का उपयोग है। इसमें वे अनुप्रयोग और वस्तुएं शामिल हैं, जिनके द्वारा सूचना स्थानांतरित, दर्ज, संपादित, संग्रहीत, हेरफेर या प्रसारित"। आईसीटी एक ऐसा माध्यम है जिसने हमारे जीने के तरीके के कई पहलुओं को बदल दिया है।

5.1.2 कार्यात्मक परिभाषा सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी का तात्पर्य ऐसे ससांधनो व साधनो से होता है जिसके माध्यम से त्वरिक गति से सूचनाओं का प्रभावी आदानप्रदान होता है।

5.2 जागरुकता

5.2.1 सैद्धान्तिक परिभाषा– के. अब्दुल्ला 2012, जानकारी या अनुभव के आधार पर यह ज्ञान होना कि वर्तमान समय में किसी स्थिति या विषय की समझ ही जागरूकता है।

5.2.2 कार्यात्मक परिभाषा वर्तमान अध्ययन में सूचना एवं संचार प्रोद्यौगिकी के प्रति जागरुकता से तात्पर्य - आधुनिक उपकरणों के विषय में नवीन अद्यतनों का ज्ञान होना सूचना एवं संचार प्रोद्योगिकी के प्रति जागरुकता है।

5.3 ज्ञान साझाकरण अभिवृत्ति

5.3.1 सैद्धान्तिक परिभाषा- - बासम हसन (2019) के अनुसार- सैद्धान्तिक परिभाषा- ज्ञान साझाकरण अभिवृत्ति एक मनोवैज्ञानिक चर है जो व्यक्तियां के अपने ज्ञान को दूसरे अन्य व्यक्तियों को बाँटने की प्रक्रिया है।

कार्यात्मक परिभाषा - वर्तमान समय में ज्ञान साझाकरण अभिवृत्ति से तात्पर्य छात्रों द्वारा विषय से सम्बन्धित सूचना

आदान-प्रदान करने के प्रति अभिवृत्ति (रवैया) से है।

5.4 व्यावसायिक आकांक्षा

5.4.1. सैद्धान्तिक परिभाषा - लैण्ट एट, ऑल (1994) के अनुसार- "व्यावसायिक आकांक्षाओं के आमतौर पर भविष्य की व्यावसायिक भूमिकाओं और गतिविधियों के सम्बन्ध में वरीयताओं के रूप में परिभाषित किया जाता है।

क्रो एवं क्रो के अनुसार - व्यावसायिक आकांक्षा किसी व्यवसाय के प्रति वह भावना है जो व्यवसायेच्छु को निरन्तर अपने उस कार्य को करने की प्रेरणा देती है" वस्तुतः बालक की व्यावसायिक वरीयता को उसकी आकांक्षा से प्रत्यक्ष रूप से सम्बन्धित है अर्थात वह किसी व्यवसाय को प्रमुखता के क्रम में अपनी रूचि सामर्थ्य व साधन के साथ निर्धारित करेगा।

5.4.2. कार्यात्मक परिभाषा - वर्तमान अध्ययन में व्यावसायिक आकांक्षाओं से तात्पर्य छात्रों द्वारा भविष्य में चयन किये जाने वाले व्यवसायों, व्यवसायिक भूमिकाओं एवं सम्बन्धित गतिविधियों के प्रति वरीयताओं से हैं।

6.0 अध्ययन के उद्देश्य

1. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के मध्य सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति जागरूकता का तुलनात्मक अध्ययन करना।

2. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के मध्य ज्ञान साझाकरण अभिवृत्ति का तुलनात्मक अध्ययन करना।

3. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के मध्य व्यावसायिक आकांक्षाओं का तुलनात्मक अध्ययन करना।

4. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति जागरूकता एवं ज्ञान भाजन अभिवृत्ति के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।

5. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति जागरूकता एवं व्यावसायिक आकांक्षाओं के मध्य सम्बन्ध का अध्ययन करना।

6. ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में ज्ञान साझाकरण अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक आकांक्षाओं के मध्य सम्बन्ध का

अध्ययन करना।

7.0 अध्ययन की परिकल्पनाऐं :

$H_0$1 ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के मध्य सूचना एवं संचार प्रोद्यौगिकी के प्रति जागरूकता में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

$H_0$2 ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के मध्य ज्ञान साझाकरण अभिवृत्ति में कोई सार्थक अन्तर नहीं है।

$H_0$3 ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों के मध्य व्यावसायिक आकांक्षाओं में कोई सार्थक अन्तर नही है।

$H_0$4 ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति जागरूकता एवं ज्ञान साझाकरण अभिवृत्ति के मध्य कोई सम्बन्ध नहीं है।

$H_0$5 ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति जागरूकता एवं व्यावसायिक आकांक्षाओं के मध्य कोई सम्बन्ध नहीं है।

$H_0$6 ग्रामीण एवं शहरी विद्यार्थियों में ज्ञान साझाकरण अभिवृत्ति एवं व्यावसायिक आकांक्षाओं के मध्य कोई सम्बन्ध नहीं है।

8.0 अध्ययन का परिसीमांकन

1 अध्ययन को केवल आगरा शहर तक ही सीमित रखा जायेगा।

2 अध्ययन हेतु केवल आगरा जिला के दयालबाग शिक्षण संस्थान एवं आगरा विष्वविद्यालय का चयन किया जायेगा।

3 अध्ययन हेतु केवल स्नातक स्तर के विद्यार्थियों को सम्मिलित किया जायेगा।

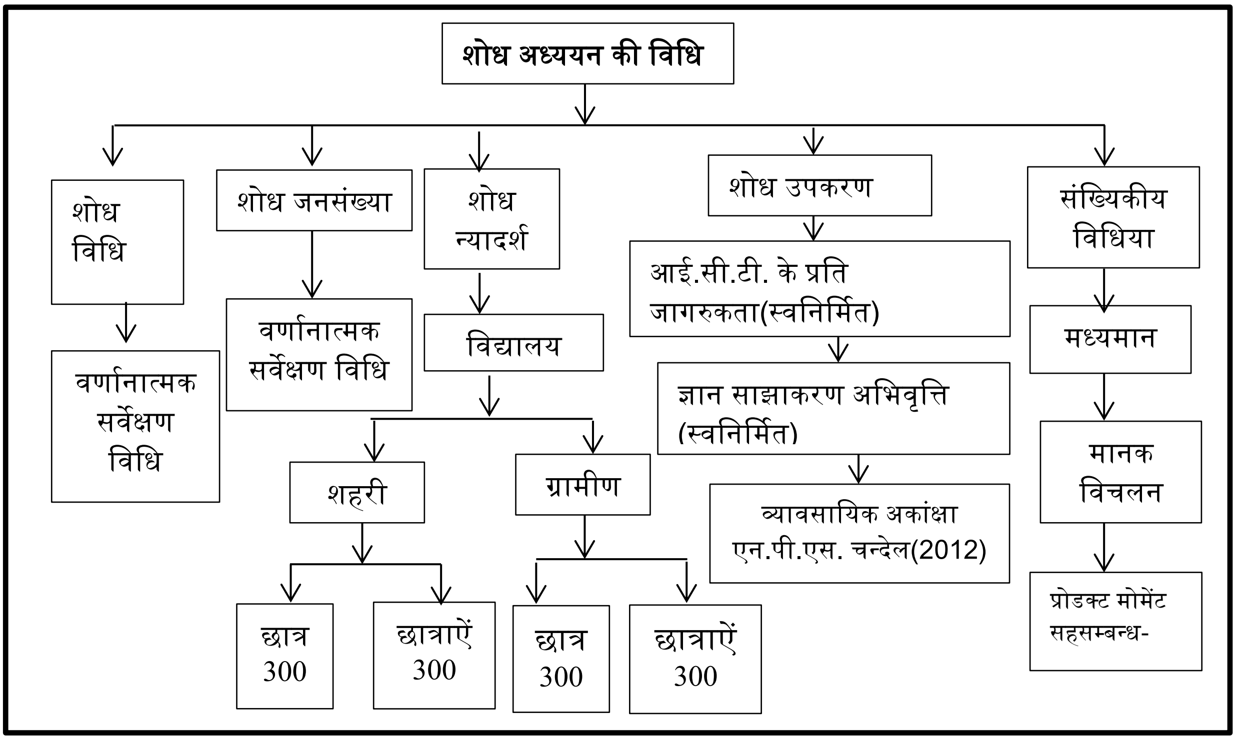

चित्र 1.0 शोध अध्ययन की विधि

9.0 शोध विधि

प्रस्तुत शोध अध्ययन में वर्णनात्मक सर्वेक्षण विधि का प्रयोग किया जायेगा।

10.0 शोध जनसंख्या

शोध जनसंख्या के अन्तर्गत स्नातक स्तर के कॉलेजो में पढ़ने वाले ग्रामीण एवं शहरी छात्रों एवं छात्राओं को सम्मिलित किया जायेगा।

11.0 शोध न्यादर्श

प्रस्तुत शोध अध्ययन में आगरा मण्डल के ग्रामीण एवं शहरी क्षेत्र में स्थित कॉलेजों के स्नातक स्तर के 1200 विद्यार्थियों का स्वउददेश्य पूर्ण विधि से चयन किया जायेगा।

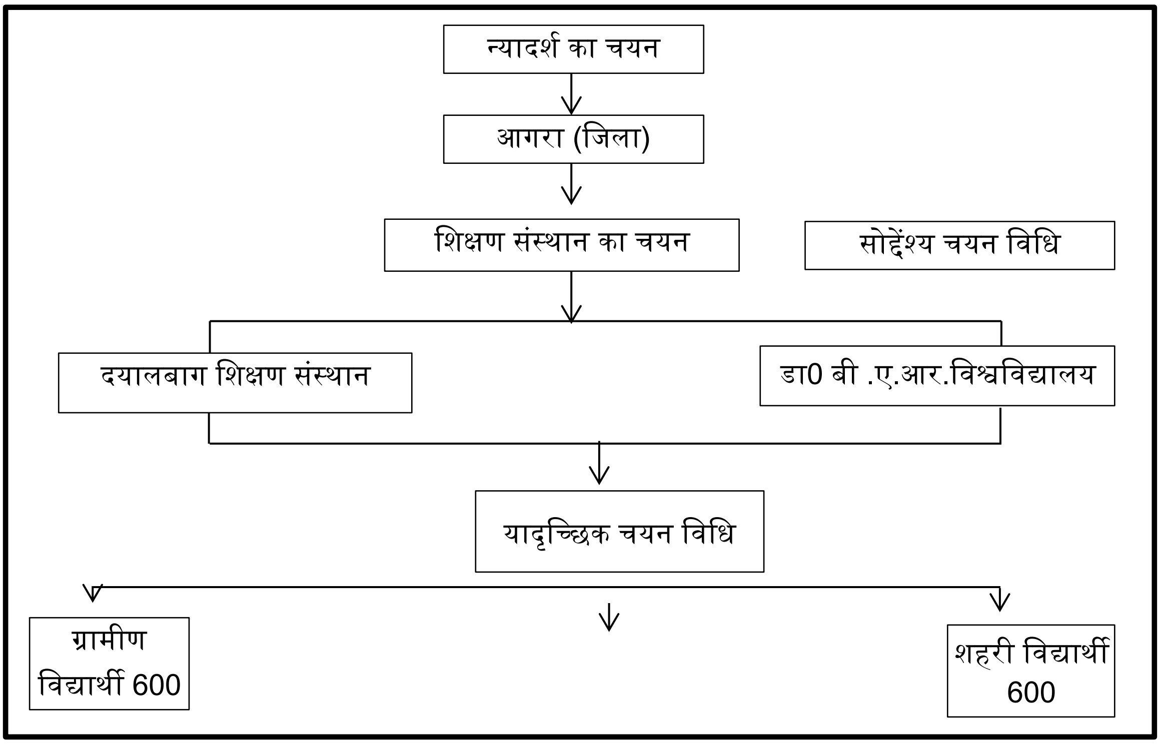

चित्र 2.0 शोध न्यादर्श

12.0 शोध उपकरण

1. विद्यार्थियों में सूचना एवं संचार प्रोद्यौगिकी के प्रति जागरूकता का परीक्षण करने के शोधार्थिनी स्वनिर्मित परीक्षण का प्रयोग किया जायेगा।

तालिका संख्या 2.0 सूचना संचार प्रौद्योगिकी के प्रति जागरूकता

क्र.सं.	वर्ष	लेखक का नाम	उपकरण का नाम	आयु वर्ग
1.	2012	नसीन बेगम एण्ड फातिमा इस्लानी	एटीट्यूट स्केल टूवर्ड इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी	स्नातक स्तर
2.	2012	ताहिरा खातून एण्ड मोनिका शर्मा	कम्प्यूटर एटीट्यूड स्केल	स्नातक स्तर
3.	2013	आशा शर्मा एवं विकास त्रिपाठी	एटीट्यूड स्केल टूवर्ड आईसीटी फॉर स्टूडेंट	माध्यमिक स्तर
4.	2015	पीपचैयप्पन.	अवेयरनेस टूवर्डस आईसीटी स्केल	माध्यमिक स्तर
5.	2017	रघु अनन्युला और महेन्द्र रेडडी सारषानी	कम्प्यूटर नॉलेज टेस्ट	माध्यमिक टीचर्स
6.	2017	लखविन्दर कौर अरजिन्दर सिंह एण्ड परमिन्दर	एटीट्यूड स्केल टूवर्ड आईसीटी स्केल	माध्यमिक स्तर
7.	2018	एस राजाशेखर	एटीट्यूड टूवर्ड यूजिंग साईवर रिर्सासिस	बीछात्र .एड.

			स्केल	
8.	2019	नसरीन एण्ड फातिमा इसलाही	एटीट्यूड स्केल टूवर्ड इनफार्मेशन टेक्नोलॉजी फॉर	माध्यमिक स्तर टीचर्स
9.	2021	एस राजाशेखर	एटीट्यूड टूवर्ड यूजिंग न्यू टेक्नोलोजी स्केल	बी .एड.छात्र

इस प्रकार शोधार्थिनी द्वारा सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति जागरूकता का अध्ययन करने के लिए भिन्न-भिन्न शोध उपकरणों का अध्ययन किया गया जिसका विवरण तालिका-2 में प्रस्तुत है।उपरोक्त शोध उपकरणों का अध्ययन करने के पश्चात् शोधार्थिनी द्वारा पाया गया कि कोई भी शोध उपकरण वर्तमान अध्ययन के उद्देश्यों को पूर्ण नहीं करता है। अधिकांष पूर्णनिर्मित शोध उपकरण सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति अभिवृत्ति का अध्ययन निर्मित करने हेतु किये गये हैं। पी. पचयैप्पन (2015) के द्वारा निर्मित शोध उपकरण सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति जागरूकता का अध्ययन करने हेतु बनाया गया है, किन्तु यह शोध उपकरण केवल माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों हेतु बनाया गया है। स्नातक स्तर के विद्यार्थियों की सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी के प्रति जागरूकता के अध्ययन हेतु कोई उपयुक्त शोध उपकरण नहीं पाया गया। इसलिए शोधार्थिनी द्वारा सूचना एवं संचार प्रौद्यौगिकी के प्रति जागरूकता का अध्ययन करने हेतु शोध उपकरण का निर्माण किया जायेगा।

2. विद्यार्थियों में ज्ञान साझाकरण अभिवृत्ति के परीक्षण के लिए शोधार्थिनी द्वारा स्वनिर्मित परीक्षणका प्रयोग किया जायेगा।

तालिका संख्या 3.0 ज्ञान साझाकरण अभिवृत्ति

क्र.सं.	वर्ष	लेखक का नाम	उपकरण का नाम	आयु वर्ग
1.	2014	वाई भूतिया एण्ड पी . खरसती	रिसर्च एटीट्यूड स्केल	रिसर्च स्कॉलर
2.	2015	किरनजीत कौर		मैथमैटिक नॉलेज टेस्ट
3.	2017	रघु अनन्युला और महेन्द्र रेड्डी सारषानी	कम्प्यूटर नॉलेज टेस्ट	माध्यमिक स्तर
4.	2019	एस. वेंकटेशन	पेरेन्टल टूवर्ड एल्डर स्केल एटीट्यूड स्केल	पैरेन्टस
5.	2020	महक एण्ड एन. शर्मा	सेल्फ नॉलेज टेस्ट	माध्यमिक स्तर
6.	2020	सीमा धवन	इन्वायरमेंट नॉलेज टेस्ट	माध्यमिक स्तर
7.	2020	आर शर्मा	टेस्ट ऑफ नॉलेज आर्ट फॉर टीचर्स	बीछात्र .एड.
8.	2020	सुनीता सिंह	एटीट्यूड टूवर्ड एल्डर स्केल	स्नातक एवं परास्नातक छात्र
9.	2020	आर ओझा के	एटीट्यूड स्केल टूवर्ड रिलीजन	हाई स्कूल से परास्नातक
10.	2021	के .मिश्रा .एस .	पीस एटीट्यूड स्केल	स्नातक स्तर

11.	2023	एन चौहान एवं सरोज ए. अरोरा	एटीट्यूड स्केल	वयस्कों के लिए

उपयुक्त तालिका में ज्ञान साझाकरण अभिवृत्ति से सम्बधित 11 परीक्षणों का अध्ययन किया हैं। यह सभी उपकरण वर्तमान शोध कार्य के उद्देश्यों के अनुरूप नहीं हैं। इसलिए शोधार्थिनी द्वारा स्वनिर्मित ज्ञान साझाकरण अभिवृति उपकरण का प्रयोग किया जायेगा। 3 व्यावसायिक आकांक्षाओं के परीक्षण के लिए प्रोफेसर एन.पी.एस. चन्देल, विभा लक्ष्मी तथा रन्जीत सिंह द्वारा निर्मित व्यावसायिक आकांक्षा स्केल (2012) का उपयोग किया जायेगा। जिसकी 0.82 एवं विस्वश्नीयता धता 0.76 हैं। यह उपकरण हिन्दी एवं अंग्रेजी भाषा में दिया गया है।

13.0 सांख्यिकीय प्रविधियाँ

प्रस्तुत शोध में मध्यमान, प्रमाणिक विचलन, टीटेस्ट एवं प्रोडक्ट मोमेंट सहसंबंध गुणांक का प्रयोग किया जायेगा।-

14.0 अध्ययन की सार्थकता

वर्तमान समय आधुनिक एवं अति प्रतिस्पार्धात्मक है। जहाँ प्रत्येक व्यक्ति के पास गुणों एवं योग्यताओं का असीमित भण्डार होना आवश्यक हो ये योग्यताऐं एवं गुण मानव संसाधन के रूप में किसी न किसी प्रकार से समाज में पहुँचती हैं एवं सामाजिक विकास में महत्वपूर्ण भूमिकाऐं निभाती है शिक्षा व्यवस्था में सुधार हेतु प्रतिदिन नयेनये प्रयास - सरकार एवं गैर सरकारी संस्थाओं द्वारा किये जा रहे हैं। गॉव की साक्षरता पर शहरों की साक्षरता पर से काफी कम है। शहरी क्षेत्रों में शिक्षा के महत्व को समझने के कारण एवं प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण होने के कारण शिक्षा के क्षेत्र में प्रतिदिन नवीन परिवर्तन हो रहे हैं। जबकि ग्रामीण परिवेश में रहने वाले व्यक्ति स्थिर जीवन व्यतीत कर रहे हैं। आज के प्रतिस्पर्धात्मक समय में प्रतिस्पर्धा का स्तर प्रतिदिन बढ़ रहा है एवं छात्रों से अपेक्षा की जाती है कि वे भी निरंतर अपनी शैक्षिक उपलब्धि को बढ़ाये इस संदर्भ में महत्वपूर्ण भूमिका अदा कर सकते है विद्यार्थियों को यदि अपनी ज्ञान प्राप्ति की सम्पूर्ण प्रक्रिया का ज्ञान हो जाता है तो उनके लिए अपनी शैक्षिक योग्यताओं को बढ़ाना और अधिक आसान हो जायेगा साथ ही छात्र यदि केवल व्यक्तिगत अध्ययन न करके समूह में अधिगम करे एवं का आदान-प्रदान करे तो उनमें विश्लेषणात्मक कौशल विकसित हो सकेंगे छात्रों के लिए आवश्यक है कि वे अपनी व्यावसायिक आकांक्षा एवं भविष्य को ध्यान में रखते हुए अपनी शैक्षिक योग्यताओं को बढ़ाये वर्तमान समय में शिक्षा में इस प्रतिस्पर्धात्मक

वातावरण के कारण छात्रों द्वारा अपनी शैक्षिक गतिविधियों में सम्पूर्ण योगदान न देने के कारण छात्र तनाव अनुभव करते हैं जिसके कारण उनका अधिगम नकारात्मक रूप से प्रभावित हो सकता है।

शहरी विद्यार्थियों के साथ साथ ग्रामीण विद्यार्थियों के लिए भी आवश्यक है कि वे वर्तमान प्रतिस्पर्धात्मक वातावरण-की आवश्यकता को समझते हुये वे शहरी विद्यार्थी के समान शिक्षा के महत्व के प्रति जागरूक हो तथा अपनी योग्यताओं से परिचित हों।

सन्दर्भ ग्रन्थ सूची

1. प्रकाश जे.एम., कुमार पी सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी संबंध में माध्यमिक शिक्षक शिक्षा छात्रों . की जागरूकता पर एक अध्ययन जर्नल इर्न्फोमेशन एण्ड नॉलेज मैनेजमेन्ट18(03), 1-22

2. प्रो० एस) .एम.के .2011) भारत के उत्तर पूर्वी क्षेत्र के विश्विद्यालय और कॉलेजों शिक्षकों के बीच सूचना एवं एक सर्वेक्षण जर्नल ऑफ मेंटल हेल्थ एण्ड एडिक्शन : संचार प्रौद्योगिकी जागरूकता17(3), 597-614-2011

3 .अलगु ए., (2018) अवेयरनैस एण्ड यूज ऑफ आई.टी.सी. अमांग अण्डरग्रैजुएट स्टूडेन्ट ऑु रूरल ऐरिया इन डिंडिगुई डिस्ट्रिक जर्नल ऑद द एक्सपीरियंश एवं स्टूडेन्ट 29(1), 9-32 2018

4 .वर्मा सी) .दहिया एस .2016) भारतीय विश्व विद्यालयों में सूचना एवं संचार प्रौद्योगिकी कै प्रति जागरूकता के प्रति लैंगिक अन्तर जर्नल ऑफ रिसर्च, 59(4), 393-405 2016

5. जावरिया, जे., सायरा एस) खालिद एम० .2020) पाकिस्तान में विश्वविद्यालय के शिक्षकों के ज्ञान साझा करने के रवैये पर व्यक्तिगत और संगठनात्मक कारकों का प्रभाव, इलेक्ट्रोनिक लाइब्रेरी

6. मुहम्मद जेएट ऑल .आई ., अकादमिक स्टाफ ज्ञान साझा करने के इरादे औश्र विश्वविद्यालय नवाचार क्षमता, बिजनेस मैनेजमेंट अफ्रीकी जर्नल 5(27) 11051-11059, 20111

7. शकीरो, एम) .2014), अकादमिक उपलब्धि के सहसंबंध के रूप में अकादमिक चिंता, जर्नल ऑफ एजूकेशन एण्ड प्रैक्टिस, 5(10) 29-36, 2014

8 ये ओ.के.आर. (2014) सऊदी अरब के संगठनों में ज्ञान साझा करने का रवैया और व्यवहार विश्वास क्यों मायने :

रखता है, मानवसंसाधन विकास और प्रबंधन के अंतर्राष्ट्रीय जर्नल, 14 (1-3), 97-118, 2014

के छात्रों के बीच ज्ञान साझा करने के दृष्टिकोण पर छात्र दृष्टिकोण, विश्वास, व्यक्तिपरक मानदंड, प्रेरणा और प्ररुस्कार का प्रभाव, इंटरनेशनल जर्नल ऑफ नौलूज एंड लर्निंग 12(4)287-304, 2018

10 . देवरूप, के.(2012) जैज अध्ययन में पढ़ाई करने वाले कॉलेज के छात्रों की व्यवसायिक आकांक्षाऐं और अपेक्षाएं, संगीत शिक्षा में जर्नल ऑफ रिसर्च, 59(4), 393-405, 2012

11. हीथर टी. आर.(2011) संचना अवसर : हाई स्कूल के छात्रों की व्यवसायिक आकांक्षाओं को आकार देने में स्कूल के सन्दर्भ की भूमिका

12. खान. एण्ड अली एन.(2019) नॉलेज शेयरिंग कॉन्सेट, एटीट्यूड इन्फ्लूइनिंग फैक्टर्स, ए केस स्टडी विद इंडियन अकैडमिक लाइब्रेरियस, जर्नल इन्फॉर्मेशन एण्ड नॉलेज मैनेजमेंट 18(03), 1-22

13. हुडारोहतक .यू.डी.डिर्पाटमेट ऑफ एजूकेश्न एम .एण्ड सैनी ए.एम., एमराहेतक हरियाणा इंडिया। .यू.डी.

14. खान. एण्ड अली एन.(2019) शर्मा. पी. (2008) कला एवं विज्ञान वर्ग के विद्यार्थियों की व्यावसायिक रूचियों का तुलनात्मक अध्ययन एम. एड. डिजर्टेशन दयालबाग शिक्षण संस्थान।

15. जर्नल ऑफ एडवान्सएण्ड स्कॉर्ली रिसर्चस इन एलाइड एजूकेशन वोल्यूम.2 जनवरी-2018, 2230.7540